चौधरी वज़ीर मोहम्मद हकला पूंछी

एक समर्पित देशभक्त और समाज सुधारक

लेखक: बरकत हुसैन, प्राचार्य, गवर्नमेंट स्कूल एजुकेशन डिपार्टमेंट

इस दुनिया में कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं जिनकी महानता आने वाली पीढ़ियों के लिए गर्व और प्रेरणा का स्रोत बन जाती है। उनके जाने के बाद भी उनका जीवन और योगदान लंबे समय तक याद किया जाता है। ऐसे ही एक उल्लेखनीय व्यक्तित्व थे **चौधरी वज़ीर मोहम्मद हकला पूंछी**, जिनका नाम समाज सेवा, समर्पण और नेतृत्व का पर्याय बन चुका है।

*वे **14 मार्च 1915** को तत्कालीन रियासत जम्मू और कश्मीर (जिसे उस समय पूंछ रियासत कहा जाता था) के ज़िला पूंछ के गाँव बांढ़ीचेचियाँ में **गुर्जर जनजाति के हकला परिवार में जन्मे।*** उनके पिता **चौधरी फतेह मोहम्मद हकला** उस क्षेत्र के प्रतिष्ठित ज़मींदार थे। उन्होंने अपने पिता को कम उम्र में खो दिया और उनकी परवरिश उनकी **माँ मखनी बी** और **चाचा नूर मोहम्मद** ने की। उस समय की परंपराओं के अनुसार उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा गाँव के सरकारी स्कूल में प्राप्त की।

वह अपनी युवावस्था में असाधारण बुद्धिमत्ता, संवेदनशीलता और समर्पण के लिए जाने जाते थे। उन्होंने कठिन परिश्रम और लगन से शिक्षा प्राप्त की। छात्र जीवन के दौरान उन्होंने समाज में व्याप्त अन्यायों को गहराई से महसूस किया—कमजोर और वंचित तबकों पर अत्याचार, उनके अधिकारों से वंचित किया जाना, और भारत का औपनिवेशिक दासता में जकड़ा होना।

इन स्थितियों ने उनके मन पर गहरा प्रभाव डाला। सामाजिक न्याय और राष्ट्रीय मुक्ति की तीव्र इच्छा से प्रेरित होकर उन्होंने औपचारिक शिक्षा छोड़ दी और अपने समुदाय और क्षेत्र की समस्याओं के खिलाफ आवाज़ उठाना शुरू कर दिया। उन्होंने लोगों को शोषण के खिलाफ संगठित किया और साथ ही भारत की स्वतंत्रता संग्राम में भागीदारी बढ़ाने के लिए एक प्रभावशाली आंदोलन चलाया। उनकी गतिविधियाँ धीरे-धीरे उनके गाँव से पूरे पूंछ क्षेत्र और फिर जम्मू और कश्मीर के अन्य ज़िलों तक फैल गईं।

चौधरी वज़ीर मोहम्मद हकला पूंछी ने अपने साथियों के साथ जम्मू-कश्मीर के विभिन्न हिस्सों की यात्रा की, लोगों को संगठित किया और शिक्षा, समाज, अर्थव्यवस्था और राजनीति से जुड़े मुद्दों पर जन जागरूकता फैलाई। उन्होंने विशेष रूप से पिछड़े और शोषित वर्गों को संगठित किया, उन्हें उनके अधिकारों के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी। उनकी कोशिशों ने राजौरी और पूंछ जैसे क्षेत्रों में नवजागरण की शुरुआत की, जहाँ के लोग स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से शामिल होने लगे।

*वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख नेताओं जैसे **महात्मा गांधी, पं. जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभभाई पटेल और मौलाना अबुल कलाम आज़ाद** के संपर्क में रहे। उन्होंने विभिन्न राज्यों में स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े कार्यक्रमों में भाग लिया और हिंदू, मुस्लिम और सिख गुर्जरों को ब्रिटिश शासन के खिलाफ संगठित करने में प्रमुख भूमिका निभाई।*

ऐसे देशभक्तों के प्रयासों से भारत को **15 अगस्त 1947** को स्वतंत्रता प्राप्त हुई, और दो संप्रभु राष्ट्र—भारत और पाकिस्तान—का निर्माण हुआ। महाराजा हरि सिंह द्वारा जम्मू-कश्मीर के भारत में विलय के बाद वहाँ शेख मोहम्मद अब्दुल्ला की अगुवाई में एक लोकतांत्रिक सरकार का गठन हुआ।

उस समय जम्मू-कश्मीर की गुर्जर-बकरवाल जनजाति अत्यंत पिछड़ेपन की शिकार थी—शिक्षा, समाज, अर्थव्यवस्था और राजनीति के हर क्षेत्र में। वे पर्वतीय और वन क्षेत्रों में रहते थे और बुनियादी सुविधाओं से भी वंचित थे। चौधरी वज़ीर मोहम्मद हकला पूंछी ने इन क्षेत्रों में जाकर लोगों को शिक्षा, सामाजिक सुधार, आर्थिक विकास और राजनीतिक संगठन के महत्व के प्रति जागरूक किया। उन्होंने जम्मू-कश्मीर सरकार और भारत सरकार दोनों से इस समुदाय के लिए योजनाएं शुरू करने और सुरक्षात्मक उपायों की मांग की।

उन्होंने कई प्रस्ताव रखे—शैक्षिक संस्थानों की स्थापना, बिजली और स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था, सड़कों का निर्माण, गोजरी भाषा का संवर्धन, और राजनीतिक प्रतिनिधित्व की सुनिश्चितता। उन्होंने पूरे भारत के विभिन्न धर्मों के गुर्जर नेताओं से संपर्क किया और एक अखिल भारतीय सहयोग नेटवर्क तैयार किया। उनकी मदद से उन्होंने केंद्रीय मंत्रियों और प्रधानमंत्री के समक्ष गुर्जरों के लिए एक समग्र विकास योजना की वकालत की।

उनकी निरंतर कोशिशों के परिणामस्वरूप केंद्र सरकार ने जम्मू और कश्मीर के लिए पंचवर्षीय योजना में **"गुर्जर उप-योजना"** शामिल की। इस योजना के तहत केंद्र सरकार ने ₹10 करोड़ और राज्य सरकार ने ₹3 करोड़ की राशि प्रदान की। इस ₹13 करोड़ से गुर्जर-बकरवाल बस्तियों में बिजली, पेयजल, सड़कें, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान की गईं।

साथ ही, सरकार ने समुदाय के छात्रों के लिए वार्षिक छात्रवृत्तियाँ शुरू कीं और हर जिले में गुर्जर-बकरवाल रिहायशी छात्रावासों की स्थापना की। घुमंतू परिवारों के बच्चों के लिए मोबाइल प्राथमिक विद्यालय आरंभ किए गए। जम्मू और कश्मीर कला, संस्कृति और भाषा अकादमी में गोजरी अनुभाग की स्थापना की गई। ऑल इंडिया रेडियो ने जम्मू और श्रीनगर स्टेशनों से गोजरी भाषा में कार्यक्रम प्रसारित करना शुरू किया, जिससे इस भाषा और साहित्य का विकास हुआ।

चौधरी वज़ीर मोहम्मद हकला पूंछी केवल एक नेता ही नहीं, बल्कि विद्वान, चिंतक, लेखक, शोधकर्ता और परिवर्तनकारी राजनीतिक-सामाजिक व्यक्तित्व भी थे। उन्होंने गुर्जर इतिहास और लोककथाओं पर गहन शोध किया और विभिन्न प्रमुख अखबारों व पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित किए। उन्होंने गोजरी साहित्य को समृद्ध किया। वे **अखिल भारतीय गुर्जर महासभा** और **अखिल भारतीय गुर्जर समाज सुधार सभा** जैसे संगठनों के राष्ट्रीय सम्मेलनों में सक्रिय रूप से भाग लेते थे।

वे जम्मू-कश्मीर से एकमात्र गुर्जर नेता थे जिन्होंने कई राष्ट्रीय स्तर के गुर्जर सम्मेलनों की अध्यक्षता की। विशेष रूप से, **1958 में हिमाचल प्रदेश में आयोजित गुर्जर सम्मेलन**, जिसमें उन्होंने हिमाचल प्रदेश के गुर्जरों को अनुसूचित जनजाति का दर्जा दिए जाने पर केंद्र सरकार को धन्यवाद दिया और जम्मू-कश्मीर के गुर्जरों के लिए भी यही दर्जा मांगा।

इसके बाद उन्होंने राज्य भर में गुर्जर बहुल क्षेत्रों में व्यापक अभियान चलाया और अनुसूचित जनजाति दर्जे की मांग को लेकर जनसभाएँ **कीं। उन्होंने 11-12 जून 1965 को दिल्ली में ऐतिहासिक अखिल भारतीय गुर्जर सम्मेलन की अध्यक्षता की,** जिसमें देशभर से हजारों लोग शामिल हुए। अपने भाषण में उन्होंने जम्मू-कश्मीर के गुर्जर-बकरवाल समुदाय के लिए अनुसूचित जनजाति दर्जे की माँग को दोहराया।

वे **16 फरवरी 1966 को मध्य प्रदेश में और 25 मई 1966 को राजस्थान के बूंदी में आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलनों में भी अपनी बात रखते रहे। 7 जनवरी 1973 को दिल्ली के कोटला मुबारकपुर** में उनके सम्मान में एक विशाल सभा आयोजित हुई, जिसमें उन्हें **"वज़ीर-उल-क़ौम" (क़ौम का वज़ीर)** की उपाधि प्रदान की गई।

उन्होंने **26 अक्टूबर 1975 क**ो दिल्ली के मावलंकर हॉल में आयोजित अखिल भारतीय भारतीय गुर्जर किसान सम्मेलन का उद्घाटन किया और राष्ट्रीय स्तर पर गुर्जरों की समस्याओं पर कई सुझाव रखे। **29 अक्टूबर 1975** को उन्होंने देशभर के गुर्जर सांसदों और विधायकों के साथ **तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी** से भेंट की और जम्मू-कश्मीर के गुर्जर-बकरवाल समुदाय को अनुसूचित जनजाति का दर्जा देने हेतु ज्ञापन सौंपा।

15 अगस्त 1977 को वे एक संक्षिप्त बीमारी के बाद 62 वर्ष की आयु में इस दुनिया से विदा हो गए, लेकिन उनके अथक प्रयासों का फल ***19 अप्रैल 1991 को मिला जब भारत सरकार ने जम्मू-कश्मीर के गुर्जर-बकरवाल समुदाय को अनुसूचित जनजाति का दर्जा प्रदान किया — यह उनकी संघर्षशील विरासत का प्रतीक है।***

अपने पूरे जीवन में उन्होंने अटूट देशभक्ति का परिचय दिया। **1965 और 1971 के भारत-पाक युद्धों** के दौरान उन्होंने पूंछ और राजौरी के लोगों को भारतीय सेना का साथ देने और पाकिस्तानी आक्रमणकारियों का डटकर मुकाबला करने के लिए प्रेरित किया।

स्वर्गीय चौधरी वज़ीर मोहम्मद हकला पूंछी ने सद्भावना और सभी धर्मों — हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई — के बीच एकता को बढ़ावा देने का भी कार्य किया। वे जीवनभर सांप्रदायिक सौहार्द और राष्ट्रीय एकता के पक्षधर रहे।

उनकी अद्वितीय सेवाओं को मान्यता देते हुए, 1996 में जम्मू-कश्मीर सरकार ने कंकोटे से बांढ़ीचेचियाँ तक 10 किलोमीटर की सड़क का नाम **"स्व. चौधरी वज़ीर मोहम्मद हकला रोड"** रखा। बांढ़ीचेचियाँ का सरकारी हाई स्कूल "**स्व. चौधरी वज़ीर मोहम्मद हकला स्मारक हाई स्कूल**" नाम से जाना जाने लगा। पूंछ के गुर्जर-बकरवाल बालक छात्रावास के सम्मेलन हॉल और पुस्तकालय को भी उनके नाम पर **"स्व. चौधरी वज़ीर मोहम्मद हकला कॉन्फ्रेंस हॉल एवं पुस्तकालय"** नाम दिया गया।

जुलाई 2022 में भारत सरकार के संचार मंत्रालय ने उनके नाम पर **₹5 का स्मारक डाक टिकट** स्वीकृत किया। यह टिकट **24 जुलाई 2024** को श्रीनगर राजभवन में जम्मू-कश्मीर के **माननीय उपराज्यपाल श्री मनोज सिन्हा** द्वारा औपचारिक रूप से जारी किया गया। यह टिकट अब भारत के सभी डाकघरों में उपलब्ध है।

जम्मू-कश्मीर के उच्च शिक्षा और स्कूल शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार, यह डाक टिकट और उनका चित्र जम्मू संभाग के दसों ज़िलों के सभी सरकारी डिग्री कॉलेजों, हाई स्कूलों और उच्च माध्यमिक विद्यालयों में लगाया गया है। इसे जम्मू विश्वविद्यालय के केंद्रीय पुस्तकालय और कुलपति कार्यालय, राजौरी और पूंछ के डाकघरों, और राजौरी के सरकारी मेडिकल कॉलेज में भी स्थापित किया गया है। पूंछ ज़िले के सभी सरकारी कार्यालयों में भी अब यह डाक टिकट फ्रेम में सम्मानपूर्वक स्थापित किया गया है। चौधरी वज़ीर मोहम्मद हक़ला पूंछी का फोटो ज़िला पूंछ के सभी प्राइवेट हाई और हायर सेकेंडरी स्कूलों तथा अन्य निजी संस्थानों में भी लगाया गया है।